IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अंबेडकर जी और दीनदयाल जी के कृषिगत विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

*डॉ. अनिल कुमार,

असि. प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, श्री बजरंग पी. जी. कॉलेज, सिकंदरपुर, बलिया, उत्तर प्रदेश

Abstract

दीनदयाल जी कृषि के समग्र विकास के लिए मुख्य रूप से सिंचाई, उर्वरक, कृषि जोत के आकार और कृषि उपज मूल्य पर अपने आर्थिक विचार दिए है। कृषि विकास हेतु सिंचाई के छोटे-छोटे परियोजनाओं, कृषि जोत का अधिकतम आकार, गोबर की खाद और उचित उपज मूल्य की बात दीनदयाल जी अपने कृषिगत विचार में करते है। अंबेडकर जी अपने कृषिगत विचार में मुख्य रूप से भूमि के छोटे जोत, भूमि की असमानता और कृषि में पूंजी की कमी पर अपने आर्थिक विचार दिए है। अंबेडकर जी का मानना था कि भूमि सुधार करके कृषि का विकास किया जा सकता हैं।

Key words- कृषि, सिंचाई, उर्वरक, कृषि जोत, उपज मूल्य, पूंजी की कमी, भूमि का राष्ट्रीयकरण, सहकारी खेती।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी और डॉ. भीमराव अंबेडकर जी दो महान भारतीय शख्सियत थे, जिन्होंने देश के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिए। उनके विचारों और कार्यों ने भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के प्रमुख आर्थिक विचार-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का आर्थिक विचार या विचार दर्शन 'एकात्म मानववाद' के नाम से जाना जाता है। दीनदयाल जी ने विभिन्न आर्थिक मुद्दों पर अपने आर्थिक विचार दिए।

दीनदयाल जी मुख्य रूप से कृषि विकास, ग्रामीण विकास, स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, विकेंद्रीकरण और अंत्योदय पर अपने आर्थिक विचार दिए है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है।

दीनदयाल जी के कृषिगत आर्थिक विचार-

दीनदयाल जी कृषि के विकास के लिए मुख्य रूप से सिंचाई, उर्वरक, कृषि जोत के आकार, कृषि उपज मूल्य पर अपने बहुत ही महत्वपूर्ण विचार दिए, जो इस प्रकार है।

दीनदयाल जी मानना था कि कृषि विकास के लिए सिंचाई हेतु मानसून पर निर्भर न रहकर, सिंचाई की समुचित व्यवस्था अर्थात छोटी छोटी परियोजनाओं द्वारा सिंचाई की जानी चाहिए।

उर्वरक के रूप में गोबर की खाद के प्रयोग की बात किए। बहुत जरूरी होने पर भी रासायनिक खाद के साथ भी गोबर की खाद मिलाकर ही प्रयोग करना चाहिए। यह विचार कहीं न कहीं जैविक खेती को ही बढ़ावा दे रही है।

दीनदयाल जी भू-स्वामी खेती की बात करते है अर्थात जो खेती कर रहा है वही जमीन का स्वामी है, मालिक है। जब किसान जमीन का स्वामी खुद को मानता है तो वह जमीन से सही तरीके (माता और पुत्र की तरह) से तभी जुड़ पाता है, जिससे उत्पादन बढ़ता है।

दीनदयाल जी अधिकतम कृषि जोत आकार की बात करते है, जिससे कृषि में तकनीक का प्रयोग कर देश में अधिक से अधिक उत्पादन किया जा सके।

दीनदयाल जी अपने कृषिगत विचार में सबसे महत्वपूर्ण विचार कृषि उपज मूल्य पर दिए। उनका स्पष्ट मानना था कि किसानों को उनके उपज का उचित मूल्य जरूर मिलना चाहिए। दीनदयाल जी उचित कृषि उपज मूल्य की वकालत किये।

कृषि उपज मूल्य के तहत उनका मानना था कि उचित कृषि उपज मूल्य दिए जाने से किसानों का एक तरफ आय बढ़ेगा तो दूसरी तरफ किसान औद्योगिक वस्तुओं का मांग भी तो करेंगे। अर्थात एक ही साथ कृषि और उद्योग का परस्पर विकास होगा जिससे देश का आर्थिक विकास होगा।

दीनदयाल जी कृषि का विकास करके, विकेंद्रीकरण और नियोजन द्वारा ग्रामीण विकास की बात करते है।

दीनदयाल जी ने भारतीय कृषि के सर्वांगीण विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल दिए। उन्होंने कहा कि कृषि को केवल एक उद्योग के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे एक जीवनशैली के रूप में अपनाया जाना चाहिए और साथ ही कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीकों और संसाधनों के उपयोग पर भी जोर दिया जाना चाहिए।

देश के लोगों के खुशहाली के लिए, अर्थव्यवस्था के विकास के लिए कृषि का विकास करना बहुत जरूरी है।

अंबेडकर जी के आर्थिक विचार-

अंबेडकर जी मुख्य रूप से मौद्रिक नीति, श्रम, कृषि विकास, औद्योगीकरण, कर और वित्तीय संघीयता पर अपने आर्थिक विचार दिए, जो बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है।

अंबेडकर जी के कृषिगत विचार-

डॉ. अंबेडकर जी के कृषिगत विचार बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने भारतीय कृषि की समस्याओं को समझने और उनका समाधान करने के लिए अपने विचार दिए, जो इस प्रकार है।

अंबेडकर जी पहले कृषि के प्रमुख समस्याओं की ओर अपना ध्यान दिए। जैसे- अंबेडकर जी भूमि की छोटी जोत को, भूमि की असमानता को, कृषि में पूंजी की कमी को कृषि के विकास के लिए बहुत बड़ी समस्या मानते थे।

अंबेडकर जी का मानना था कि इन समस्याओं को दूर किये बिना हम कृषि का समुचित विकास नही कर सकते है।

इन समस्याओं को दूर करने के लिए अंबेडकर जी ने कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए, जो इस प्रकार है।-

भूमि का राष्ट्रीयकरण

सहकारी कृषि को बढ़ावा

कृषि में पूंजी निवेश को बढ़ावा

कृषि शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा।

अंबेडकर जी कृषि के समुचित विकास के लिए भूमि सुधार करने और किसानों के अधिकारों की आवश्यकता पर जोर देते थे। अंबेडकर जी के अनुसार भूमि का वितरण न्यायपूर्ण होना चाहिए और किसानों को उनकी भूमि के लिए उचित मुआवजा मिलना ही चाहिए।

अंबेडकर जी कृषि विकास हेतु सिंचाई की अच्छी व्यवस्था और उन्नत तकनीक के प्रयोग के पक्षधर थे।

तुलनात्मक अध्ययन-

दीनदयाल जी और अम्बेडकर जी के कृषिगत विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर हम पाते है कि उनके विचारों में कुछ समानताएं हैं तो कुछ असमानताएं भी है।

दोनों लोग ही कृषि के विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता पर ध्यान दिए।

दोनों लोग, कृषि को देश की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण मानते थे।

दीनदयाल जी अपने कृषिगत विचार में जैविक खेती और उचित कृषि उपज मूल्य पर जोर देते है, जबकि अंबेडकर जी अपने कृषि विचार में भूमि सुधार और किसानों के अधिकारों पर जोर दिए।

दीनदयाल जी कृषि को आत्मनिर्भर बनाने और बेहतर सिंचाई हेतु छोटे छोटे परियोजनाओं पर ध्यान देते हैं, जबकि डॉ. अंबेडकर जी भूमि के पुनर्वितरण और कृषि के आधुनिकीकरण पर फोकस करते हैं।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष रूप में देखा जाय तो दीनदयाल जी और अंबेडकर जी के कृषिगत विचारों में कुछ समानता भी है और कुछ असमानता भी है, परन्तु दोनों लोगों के विचार में, कृषि के विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की जरूरत हैं।

दीनदयाल जी और अंबेडकर जी के कृषिगत विचार आज भी बहुत महत्वपूर्ण हैं।

इनके विचारों से स्पष्ट होता है कि बिना कृषि का विकास किए देश का आर्थिक विकास संभव नही है।

दीनदयाल जी और अंबेडकर जी के कृषिगत विचार आज भी प्रासंगिक हैं और देश की कृषि नीति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं।

संदर्भ-

1. उपाध्याय, दीनदयाल (1958). भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

2. उपाध्याय, दीनदयाल (1972). राष्ट्रचिंतन. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

3. उपाध्याय, दीनदयाल (1979). राष्ट्रजीवन की दिशा. लखनऊ: लोकहित प्रकाशन.

4. उपाध्याय, दीनदयाल. एकात्म मानववाद. नई दिल्ली: भारतीय जनसंघ कार्यालय.

5. उपाध्याय, दीनदयाल (1991). एकात्म मानव दर्शन (दीनदयाल उपाध्याय, माधव सदाशिव गोलवलकर, दत्तोपंत ठेंगड़ी, तृतीय संस्करण). नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

6. ठेंगड़ी, दत्तोपंत (1991). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति दर्शन खंड- 1: तत्व जिज्ञासा. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

7. कुलकर्णी, शरद अनन्त (2014). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार दर्शन खंड-4: एकात्म अर्थनीति. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

8. पाठक, विनोद चंद्र (2009). पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिन्तन. नई दिल्ली: प्रकाशक- आर. डी. पाण्डेय, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस.

9. गुप्त, बजरंग लाल (2014). दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म अर्थ चिंतन. मीडिया-विमर्श.

10. Arya, R.K.(2014). The economic thoughts of Dr. B.R. Ambedkar with respect to Agriculture sector. IISTE.

11. Bagde, R.M.(2014). An evaluation of Dr. Ambedkar's economic thought on Agriculture in the context of globalization. Ideas. RePEc.

12. आनंद, सविता.(2020). अंबेडकर के सुझाये कृषि सुधारों को अपनाएं सरकारें. सत्य हिंदी.

13. Ambedkar, B.R.(1918). Problems of small Holding in India.

14. Ambedkar, B.R.(1947). States and Minorities.

15. Velivada.com